# भारतीय स्थापत्य एवं मूर्तिकला का इतिहास

*डॉ. नीरू कल्ला

## परिचय

मूर्तिकला के बारे में अब तक हमने अपने कई एपिसोड्स में मूर्तिकला के महत्त्व को समझने का प्रयास किया है और यह जाना है कि मूर्तिकला कला विभिन्न कालों में निरन्तर विकसित होती रही है एवं भक्त और भगवान के बीच एक सामंजस्य स्थापित करने का माध्यम बनती रही है इसी परिप्रेक्ष्य में मूर्तिकला कला के अपने इस अंक में हम आज कुछ अन्य कलाओं के बारे में जानने का प्रयास करेंगे-

## मृणमूर्ति कला

गुप्तकाल में मृणमूर्ति कला का भी सम्यक् विकास हुआ। इस काल के कुम्भकारों ने पकी हुई मिट्टी की छोटी-छोटी मूर्तियाँ बनायीं। इनमें चिकनाहट और सुडौलता पाई जाती है। विष्णु, कार्तिकेय, दुर्गा, गंगा, यमुना आदि देवी-देवताओं की बहुसंख्यक मृणमूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। धार्मिक मूर्तियों के साथ-साथ अनेक लौकिक मूर्तियाँ भी मिलती हैं। गुप्त काल में मथुरा मृण्मूर्ति निर्माण का एक बड़ा केन्द्र था।

इस काल का एक अपराजेय मृण्फलक यानी बेर सेत-माहेत से मिला है, जिसमें सिंहासीन दुर्गा की मूर्ति है। पहाड़पुर से कृष्ण की लीलाओं से संबंधित कई मूर्तियाँ मिलती हैं। अहिच्छत्र की मूर्तियों में गंगा-यमुना की मूर्तियाँ तथा पार्वती के सुन्दर सिर का उल्लेख किया जा सकता है। भीतरगाँव मंदिर से शेषशायी विष्णु का एक सुन्दर मृण्फलक मिला है। भीटा के उत्खनन के दौरान बहुसंख्यक मृण्मूर्तियाँ प्रकाश में आईं, जिनके विषय में मार्शल महोदय ने टिप्पणी की कि कला एवं सौंदर्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होने के साथ ही साथ इनसे गुप्तकालीन वेषभूषा, फैशन आदि के विषय में भी अच्छी जानकारी मिल जाती है।

## गुप्तोत्तर कालीन मूर्तिकला

गुप्तकाल के पश्चात् मूर्तिकला की प्रगति में कुछ बाधा अवश्य पहुँची, इसके बावजूद इस काल में अनेकानेक मूर्तियों का निर्माण हुआ। अजन्ता, एलोरा, एलीफेन्टा, बाघ, सारनाथ, वैशाली आदि इस काल के प्रमुख मूर्तिकला केन्द्र थे। इस काल में बौद्ध, जैन, ब्राह्मण धर्म से संबंधित अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनायीं गयीं।

इस काल की मूर्तिकला की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

- इस काल की मूर्तियाँ सजीव एवं सुन्दर हैं। इनमें भद्देपन की कहीं कोई गुंजाइश नहीं दिखायी देती। मूर्तियाँ भावपूर्ण हैं।
- सारनाथ की मूर्तियों में गंभीरता, शांति आदि के भाव दिखायी देते हैं। इन मूर्तियों में सजावट के चिन्ह पाये जाते हैं।

- सारनाथ की मूर्तियों में स्वर्णीयता की छाप दर्शित होती है। अधिकतर मूर्तियाँ बौद्ध धर्म से सम्बन्धित हैं। इन मूर्तियों में बौद्ध धर्म के पतन के चिन्ह परिलक्षित होते हैं।

भारत में स्थापत्य व वास्तुकला की उत्पत्ति हड़प्पा काल से माना जाता है। स्थापत्य व वास्तुकला के दृष्टिकोण से हड़प्पा संस्कृति तत्कालीन संस्कृतियों से काफी ज्यादा आगे थी। भारतीय स्थापत्य एवं वास्तुकला की सबसे खास बात यह है कि इतने लंबे समय के बावजूद इसमें एक निरंतरता के दर्शन मिलते हैं। इस मामले में भारतीय संस्कृति अन्य संस्कृतियों से इतर है।

**सिंधु घाटी सभ्यता**

सिंधु घाटी सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता का काल 3500-1500 ई.पू. तक माना जाता है। इसकी गिनती विश्व की चार सबसे पुरानी सभ्यताओं में किया जाता है। हड़प्पा की नगर योजना इसका एक जीवंत साक्ष्य है। नगर योजना इस तरह की थी कि सड़के एक-दूसरे को समकोण में काटती थीं। हड़प्पा व मोहनजोदड़ो इस सभ्यता के प्रमुख नगर थे। यहां की इमारतें पक्की ईंटों की बनाई जाती थीं। यह एक ऐसी विशेषता है जो तत्कालीन किसी अन्य सभ्यता में नहीं पाई जाती थी। मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत उसका स्नानागार था। घरों के निर्माण में पत्थर और लकड़ी का भी प्रयोग किया जाता था।

मोहनजोदड़ो से मिली मातृ देवी, नाचती हुई लड़की की धातु की मूर्ति इत्यादि तत्कालीन उत्कृष्ट मूर्तिकला के अनुपम उदाहरण हैं।

**मौर्यकाल:**

मौर्यकाल के दौरान देश में कई शहरों का विकास हुआ। मौर्यकाल भारतीय कलाओं के विकास के दृष्टिकोण से एक युगांतकारी युग था। इस काल के स्मारकों व स्तंभों को भारतीय कला के क्षेत्र में मील का पत्थर माना जाता है। इस काल के स्थापत्य में लकड़ी का काफी प्रयोग किया जाता था। अशोक के समय से भवन निर्माण में पत्थरों का प्रयोग प्रारंभ हो गया था। ऐसा माना जाता है कि अशोक ने ही श्रीनगर (कश्मीर) व ललितपाटन(नेपाल) नामक नगरों की स्थापना की थी। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार अशोक ने अपने राज्य में कुल 84,000 स्तूपों का निर्माण कराया था। हालांकि इसको अतिश्योक्ति माना जा सकता है। स्थापत्य के दृष्टिकोण से सांची, भारहुत, बोधगया, अमरावती और नागार्जुनकोंडा के स्तूप प्रसिद्ध हैं। अशोक ने 30 से 40 स्तम्भों का निर्माण कराया था। अशोक के समय से ही भारत में बौद्ध स्थापत्य शैली की शुरुआत हुई। इस काल के दौरान गुफाओं, स्तम्भों, स्तूपों और महलों का निर्माण कराया गया। अशोक के स्तम्भों से तत्कालीन भारत के विदेशों से संबंधों का खुलासा होता है। पत्थरों पर पॉलिश करने की कला इस काल में इस स्तर पर पहुँच गई थी कि आज भी अशोक की लाट की पॉलिश शीशे की भांति चमकती है। मौर्यकालीन स्थापत्य व वास्तुकला पर ग्रीक, फारसी और मिस्र संस्कृतियों का पूरी तरह से प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

परखम में मिली यक्ष की मूर्ति, बेसनगर की मूर्ति, रामपुरवा स्तम्भ पर बनी साँड की मूर्ति तथा पटना और दीदारगंज की मूर्तियां विशेष रूप से कला के दृष्टिकोण से अद्वितीय हैं।

**शुंग, कुषाण और सतवाहन:**

232 ई.पू. में अशोक की मृत्यु के थोड़े काल पश्चात ही मौर्य वंश का पतन हो गया। इसके बाद उत्तर भारत में शुंग और

कुषाण वंशों और दक्षिण में सतवाहन वंश का शासनकाल आया। इस समय के कला स्मारक स्तूप, गुफा मंदिर (चैत्य), विहार, शैलकृत गुफाएं आदि हैं। भारहुत का प्रसिद्ध स्तूप का निर्माण शुंग काल के दौरान ही पूरा हुआ। इस काल में उड़ीसा में जैनियों ने गुफा मंदिरों का निर्माण कराया। उनके नाम हैं- हाथी गुम्फा, रानी गुम्फा, मंचापुरी गुम्फा, गणेश गुम्फा, जय विजय गुम्फा, अल्कापुरी गुम्फा इत्यादि। अजंता की कुछ गुफाओं का निर्माण भी इसी काल के दौरान हुआ। इस काल के गुफा मंदिर काफी विशाल हैं।

इसी काल के दौरान गांधार मूर्तिकला शैली का भी विकास हुआ। इस शैली को ग्रीक-बौद्ध शैली भी कहते हैं। इस शैली का विकास कुषाणों के संरक्षण में हुआ। गांधार शैली के उदाहरण हद्दा व जैलियन से मिलते हैं। गांधार शैली की मूर्तियों में शरीर को यथार्थ व बलिष्ठ दिखाने की कोशिश की गई है। इसी काल के दौरान विकसित एक अन्य शैली- मथुरा शैली गांधार से भिन्न थी। इस शैली में शरीर को पूरी तरह से यथार्थ दिखाने की तो कोशिश नहीं की गई है, लेकिन मुख की आकृति में आध्यात्मिक सुख और शांति पूरी तरह से झलकती है।

सतवाहन वंश ने गोली, जग्गिहपेटा, भट्टीप्रोलू, गंटासाला, नागार्जुनकोंडा और अमरावती में कई विशाल स्तूपों का निर्माण कराया।

**गुप्तकालीन वास्तु व स्थापत्य:**

गुप्तकाल के दौरान स्थापत्य व वास्तु अपने चरमोत्कर्ष पर था। इस काल के मंदिरों का निर्माण ऊँचे चबूतरों पर पत्थर एवं ईंटों से किया जाता था। गुप्तकालीन मंदिरों के सबसे भव्य और महत्वपूर्ण मंदिर देवगढ़ (झाँसी के पास) और भीतरगांव (कानपुर) हैं। इन मंदिरों में रामायण, महाभारत और पुराणों से विषय-वस्तु ली गई है। भीतरगांव (कानपुर) का विष्णु मंदिर ईंटों का बना है और नक्काशीदार है।

गुप्तकाल की अधिकांश मूर्तियाँ हिंदू-देवताओं से संबंधित हैं। शारीरिक नग्नता को छिपाने के लिए गुप्तकाल के कलाकारों ने वस्त्रों का प्रयोग किया। सारनाथ में बैठे हुए बुद्ध की मूर्ति और सुल्तानगंज में बुद्ध की तांबे की मूर्ति उल्लेखनीय हैं। विष्णु की प्रसिद्ध मूर्ति देवगढ़ के दशावतार मंदिर में स्थापित है।

**चोलकाल:**

चोलों ने द्रविड़ शैली को विकसित किया और उसको चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया। राजाराज प्रथम द्वारा बनाया गया तंजौर का शिव मंदिर, जिसे राजराजेश्वर मंदिर भी कहा जाता है, द्रविड़ शैली का उत्कृष्ट नमूना है। इस काल के दौरान मंदिर के अहाते में गोपुरम नामक विशाल प्रवेश द्वार का निर्माण होने लगा। प्रस्तर मूर्तियों का मानवीकरण चोल मूर्तिकारों की दक्षिण भारतीय कला को महान देन थी। चोल काँस्य मूर्तियों में नटराज की मूर्ति सर्वोपरि है।

***सहायक आचार्य**
**चित्रकला विभाग**
**प्रभा देवी मेमोरियल महाविद्यालय आमेर**
**जयपुर (राज.)**